छत्तीसढ़ के लोकगीतों में राम

डॉ. दीपशिखा पटेल
सहायक प्राध्यापक,
लोकसंगीत विभाग
इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय,
खैरागढ़ (छ.ग.)

डॉ. नत्थू तोड़े
लोकसंगीत विभाग,
इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय,
खैरागढ़ (छ.ग.)

भारत के मध्य में स्थित छत्तीसगढ़ को पौराणिक काल में दक्षिणापथ तथा दक्षिण कौसल के नाम से जाना जाता था। ''ततो कोसलराजानं भानुमन्तं सुसत्कृत्म्'' के अनुसार भानुमंत, कोसल प्रदेश में अयोध्या नरेश दशरथ के समकालीन थे। माना जाता है कि राजकुमारी भानुमति उनकी पुत्री का नाम था। कोसल प्रदेश से होने के कारण भानुमति का नाम कौशल्या रखा गया। इससे यह जानकारी मिलती है कि विवाह के पश्चात् स्त्री का नाम ससुराल में परिवर्तित होने की परम्परा अति प्राचीन है जो छत्तीसगढ़ में आज भी प्रचलित है। जैसे– रायपुर की बेटी रायपुरहीन हो जाती है, बिलासपुर की बेटी बिलासपुरहीन हो जाती है।

उत्तर कोसल के राजा दशरथ की पत्नी कौशल्या परम्परानुसार दक्षिण कोसल से संबंधित थी। ''इस परम्परा की पुष्टि महाकवि कालिदास ने अपने 'रघुवंश' में किया है महाकवि कालिदास की तपोभूमि अर्थात साधना स्थली के रूप में विख्यात छत्तीसगढ़ (दक्षिण कोसल के अन्तर्गत स्थित रामगिरि पर्वत) के रामगढ़ पर्वत में होने की शील सम्पन्न परम्परा की मधुर स्मृति अंचल के जनमानस को आज भी गौरवान्वित करती है।'' छत्तीसगढ़ श्री राम के ननिहाल होने के कारण आज भी यहाँ की लोक संस्कृति और लोकगीतों में श्री राम दृष्टिगोचर होते हैं।

पौराणिक आध्यात्मिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर छत्तीसगढ़ को माता कौशिल्या का जन्म भूमि कहा जाता है। इसलिये इस प्रदेश को दक्षिण कौशल के नाम से भी जाना गया। छत्तीसगढ़ श्री राम के ननिहाल होने के कारण लोक परम्परा में भांजा को प्रणाम करने की परम्परा है जो छत्तीसगढ़ से अन्यत्र और कहीं नहीं दिखाई देता। यहां मनाये जाने वाले तीज–त्यौहारों के साथ साथ विभिन्न संस्कारों में राम ही राम है।

शिशु के जन्म लेते ही घर आंगन में खुशियां गूंजने लगती है थाली बजाकर महिलाओं के द्वारा सोहर गीत गाया जाता है। सोहर गीत के अवसर पर भगवान राम को केन्द्रित कर महिलाओं के द्वारा सोहर गीत गाया जाता है। नवागत संतान को राम सदृश्य मानते हैं।

सोहर –

''कउन घड़ी भये सिरी राम, कउन घड़ी लछिमन हो
ललना कउन घड़ी भरत भुवाल, तीनों घर सोहर हे।।
भले घड़ी भये सिरी राम, भले घड़ी लछिमन हो
ललना भले घड़ी भरत भुवाल, तीनों घर सोहर हे।।
कउन के भये सिरी राम कउन के लछिमन हो
ललना कउन के भरत भुवाल, तीनों घर सोहर हे।।
कौसिल्या के भये सिरी राम, सुमित्रा के लछिमन हो
ललना केकई के भरत भुवाल, तीनों घर सोहर हे।।''

छत्तीसगढ़ी लोक में बच्चे के जन्म के बाद छठवें दिन छठी का आयोजन बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। वधु पक्ष और वर पक्ष के लोगों के द्वारा नवागत शिशु और माता पिता को बधाई देने की परम्परा है। बधाई गीत में राम, लखन, भरत और शत्रुहन का स्वरूप दिखता है।

बधाई गीत–

''अइसन जानतेंव मंय राम के जनम होई हैं
लछिमन के जनम होईहै हो
ललना, कारी कलुरिया दुहईतेंव,
मंय राम नहवई लेतेंव हो ललना।
तेलीन लाहू तेल, तमोलिन पनवा
तमोलिन पनवा हो
ललना, मालिन चोवा फुलेल लगईतेंव
मंय राम नहवई लेतेंव हो ललना।
ननदी लाहू कजरा,
अखियन अंजवाहूं, टीका लगवाहू हो
ललना, सुघ्घर पलना बनवईतेंव,
मंय राम नहवई लेतेंव हो ललना।''

विवाह संस्कार –

लोकजीवन में जन्म, विवाह और मृत्यु संस्कार ही प्रमुख है। छत्तीसगढ़ में विवाह संस्कार में गाये जाने वाले गीत को बिहाव गीत कहते हैं। इस गीत को विभिन्न नेंग के अनुसार गाते हैं। मंगनी और मण्डपाच्छादन के बाद तेल चढ़ाने की परम्परा है। विवाह संस्कार के गीत में राम सर्वोपरि है।

तेल चढ़ाने का गीत–

''एक तेल चढ़गे ओ हरियर–हरियर
मड़वा मा दुलरू तोर बदन कुम्हलाय।
राम ओ लखन के दाई तेल ओ चढ़त हे
कहवां के दियना दाई होवत हे अंजोर।
घर ले ओ निकले, हरियर–हरियर
मड़वा मा दुलरू तोर बदन कुम्हलाय।
काकर अंगना दाई तेल ओ चढ़त हे
काकर अंगना दाई होवत हे अंजोर।
दसरथ अंगना दाई तेल ओ चढ़त हे
दसरथ अंगना दाई होवत हे अंजोर।''

नहडोरी–

नदिया बड़ी हो अथवा छोटी वह जीवन दायिनी कहलाती है। लोक जीवन में जल स्त्रोतों का गंगा कहा जाता है। नदी, नाले, तालाब, कुआँ कहीं का भी जल हो उसे गंगा का संबोधन दिया जाता है वह इसलिये कि जल हमें जीवन देता है। लोक बड़ा आस्थावान है वह स्थानीय जल स्त्रोंतो को भी उतना ही महत्व देता है जितना गंगा जमुना या अन्य पवित्र नदियों को। छत्तीसगढ़ के लोक जीवन में नेगों में नहडोरी एक प्रमुख नेंग है जिसमें दूल्हा–दूल्हन को विधि–विधान से फेरे के पूर्व स्नान कराया जाता है। यह मंगल स्नान घर में सम्पन्न होता है जिसे नहडोरी कहा जाता है।

गीत–
''सीता जो मांगे अजोधिया के राजे
सरजू नहाये के बड़ा आसे,

सरजू नदी के तीर अवध नगरिया,
जहाँ बसे राम–लखन दूनो भईया।
दसरथ जइसे ससुर मिलही,
रानी कौसिल्या जस सासे।
सुमंत जइसे मंत्री मिलही,
अउ सेवक मिले हनुमाने।
लछिमन जइसे देवर मिलही,
पति मिले सिरी भगवाने।
सीता जो मांगे अजोधिया के राजे,
सरजू नहाये के बड़ा आसे।''

सुवा गीत–

'गौरा–गौरी' छत्तीसगढ़ी लोक परम्परा के प्रमुख महत्वपूर्ण अनुष्ठान है। इस अनुष्ठान में लोक की मंगल भावना निहित है। इस अवसर पर महिलाओं के द्वारा सुवागीत एवं नृत्य किया जाता है। नारी जीवन की व्यथा सुवा गीतों में अभिव्यक्त होती है। सीता माता की व्यथा से समूचा जग परिचित है। ऐसे में सुवा गीतों में माता सीता का स्वरूप तो दिखाई ही देगा।

गीत–
''दिन नही चौना ना रतिहा निदरिया रे सुवना
न भूख पियास उठाये।
राजा दसरथ के नंद कुमार ला रे सुवना
सबरी भक्तिन ध्यान लगाये।
राम लगाही बेड़ापार रे सुवना
के ओकरे घ्यान मा बुड़े हे।
डगमग–डगमग डोले इन्दरासन रे सुवना
भगवान ला जनाबो मिलके।
दउड़त चले मोर रामे लछिमन रे सुवना
ओ दरसन परसन के काजे।''

ददरिया–

ददरिया लोकगीत जहां जीवन में रस घोलता है वहीं श्रम की थकान को भी मिटाता है। यह गीत लोक के ऊर्जा के लिए प्रेरणा का कार्य करता है। चाहे वह श्रृंगार परक हो या धार्मिक दृष्टि से। शरीर एवं मन को थका देने वाले कार्य के समय गाये जाने वाले ददरिया गीत में राम के बनवासी रूप का चित्रण भी मिलता है। हो सकता है राम के बनवास के काल में उठाये गये कष्ट को लोक ददरिया के माध्यम से व्यक्त करता हो?

गीत–
''राम धरे धनुस लखन धरे बान
सीता माई के खोजन बर निकल गे हनुमान।
पागा तो बांधे पुरूत करके,
राम झिरिया मा रोवे सुरता करके।
कोन बन आमा कोन बन जाम
कोन बन के चिरईयां बोलथे राम–राम
सावन रे सावन आंसो दुई सावन
सीता माता ला हरके, लेगे रावन।
बिधि अउ बिधना के हवय बड़े काम
बन–बन मा तो भटके लखन सिया राम।
कांदी रे लुवे काबा दुई काबा,
तोर संग नई जाये ढोली ढाबा, सिया राम भजले।
चारे रे खुटा चारे पाटी,
कंचन तोर काया हो जाही माटी, सिया राम भजले।''

करमा गीत–

'करमा' कर्म से अभिप्रेरित है और कर्म लोक की आधार भूमि है। उसकी प्रेरणा शक्ति है। जिसे शास्त्र में 'कर्म प्रधान विश्व कारी राखा' कहा गया है। छत्तीसगढ़ी लोक में मृत्यु संस्कार में निर्गुणी

भजन और करमा गीत गाने की प्रथा है। मानव के अंतिम यात्रा में भी 'राम नाम सत्य' है का उद्घोष किया जाता है। राम छत्तीसगढ़ी लोक में तारन हार भी हैं।

गीत–

''ओ हो हो हाय चोला चार दिना के राम
माटी मा मिल जाही चोला चार दिना के रे।
राजा करन दधीचि जइसे बड़े–बड़े दानी
एक दिन आईस सबो चलो गिन रावन जस अभिमानी
खाये पिये लये दये अउ हरि के नाम बिसारे
मजा मउज मा उमर बिताये, जिनगी नहीं सुधारे
अनई डोंगर के कनई कटा ले, बन बिंदरा के बास रे
सेस नाग के लालन बेटी, बन मा काटे घास रे
ये रे कोस्टाईन वाले पहिरे कोस्टावन धोती,
सीता ला लेगे रावन हरके रे, ये हो माया
सीता ला लेगे रावन हर के रे हो–''

नाचा गीत–

'नाचा' छत्तीसगढ़ी लोक संस्कृति का सिरमौर है। लोक जीवन का प्रभावी दर्शन नाचा और नाचा गीत में होता है। नाचा में गम्मतिहा और नजरिया गीत का विशेष महत्व है। सीता के रावण द्वारा हरण किये जाने वाले पक्ष को नाचा गीत में गातें हैं। गाने के साथ साथ नाचा के कलाकारों के द्वारा अभिनय किये जाने पर दर्शकों की आंखों में आंसू बहना छत्तीसगढ़ी लोक में राम और सीता माता की प्रधानता को दर्शाता है।

गीत–

''द्वादे कलम हरि स्याही मंगवाही,
स्याही मंगवाही राम, स्याही मंगवाही,
द्वादे कलम हरि स्याही मंगवाही।
मेघनाथ रावन कस बेटा, कुम्भकरन अस भाई
दस मस्तक बीस भुजा रावन के,
का करिहैं दूनो भाई, रामा का करिहैं दूनो भाई।
अतका के बात सुन जटायु हंस दिये ललकारी गा
किनकर हव तुम धिया पतोइया,
अउ रावन हर ले जाई रामा, रावन हर ले जाई।
सुरूज बरन निरपति राजा दसरथ,
जिनकर पुत रघुराई गा, उनखर हंव मय धिया पतोइया
रावन हर ले जाई रामा, रावन हर ले जाई।''

लोक भजन–

लोक भजन अध्यात्म एवं देव अराधना से प्रेरित होता है। लोक भजनों में राम के देव तुल्य मान कर उनकी अराधना करते हैं। छत्तीसगढ़ में राम सत्ता या रामधुनी की परम्परा है। राम नाम की अलख जगाना अन्तर आत्मा की सुखद साधना है। छल कपट, अन्तर द्वेष का भी निवारण है। इसीलिये संभवतः लोक में –तोला जोगी जानेव रे भाई का जानेव लंका पति रावन का टेक मिलता है।

गीत–

''तोला जोगी जानेव रे भाई, का जानेंव लंकापति रावन
जोगी जानेव–
आघु–आघु राम चलत हे, पाछु मा लछिमन भाई
मांझ मझोलन सीया जानकी, चित्रकोट बर जाई।
जोगी के रूप धरे निसाचर, भिक्षा मंगन चले आई
भिक्षा ला धरके निकले जानकी, रावन हर ले जाई।
हरर–हरर सीता माई रोवे, सरन–सरन गोहराये गा
तीन लोक में है कोई जोइधा, रथ राखे बिलमाई।''

जसगीत–

छत्तीसगढ़ का लोक जीवन प्राचीन काल से मातृ पूजक रहा है। इसीलिए आज भी छत्तीसगढ़िया लोक में छत्तीसगढ़ महतारी कहकर सम्बोधन करता है। चैत्र कुंवार में नवरात्रि में जस पचरा गाने की परम्परा है। देवी के नौ रूपों का वर्णन के साथ ही राम के चरित्र का भी वर्णन जस पचरा गीतों में मिलता है। चूंकि यह लोक की अभिव्यक्ति है इसलिये राम सीता का वर्णन जस पचरा गीतों में मिलता है।

गीत–

''हो मईया ताले सगुरिया, ताले सगुरिया के निरमल पानी हो माय
कउन कोड़ावे ताल सगुरिया, कउन बंधावे पारे हो माय
कउन लगावे लख अमरईया, कउन बने रखवारे –
हो मईया ताले सगुरिया, ताले सगुरिया के निरमल पानी हो माय
राम कोड़ाते ताल सगुरिया, लखन बंधावे पारे हो माय
सीता लगावे लख अमरईया, लंगुरे भये रखवारे–
हो मईया ताले सगुरिया, ताले सगुरिया के निरमल पानी हो माय।''

फाग गीत–

प्रकृति मानव की सहचरी है। यह सर्वविदित है शीत ऋतु के समाप्ति के पश्चात बसंत के आगमन के साथ छत्तीसगढ़ी लोक में फागुन के गीत गूंजने लगते हैं। पौराणिक कथा के अनुसार राम भक्त प्रहलाद की कथा सर्वविदित है। इसी कारण होलिका दहन का आयोजन होता है। इसीलिए छत्तीगसढ़ के फाग गीतों में राम के दर्शन होते हैं। लोक की धारणा है कि होली की शुरूवात अयोध्या से मानी गयी है।

गीत–

''बाजे नगारा दस जोड़ी,
राम लखन खेले होरी

पहिली होरी अजोधिया मा खेले
राम सीता के हवय जोड़ी
काखर हाथ मा रंग कटोरा
काखर हाथ मा पिचकारी।
राम के हाथ मा रंग कटोरा
लखन के हाथ मा पिचकारी।
काकर भींजगे कुरता जामा
काकर भींजगे साड़ी।
राम के भींजगे कुरता जामा
सीता के भींजगे साड़ी।''

किसी भी प्रदेश की संस्कृति, उसके प्राचीन वैभव तथा परम्परा का परिचय कराती है। छत्तीसगढ़ में अनेक संस्कृतियों का प्रादुर्भाव एवं संघर्ष के कथा की जानकारी मिलती है। छत्तीसगढ़ का प्राचीन नाम 'दक्षिण कोसल' था। यहाँ आर्य–अनार्य संस्कृति का विकास, वैदिक युग में सु–संस्कृत समाज की संरचना का विकास तथा रामायण काल में आदर्श परम्परा निर्वहन की संस्कृति की महिमामय गाथा मिलती है। प्राचीन काल से ही छत्तीसगढ़ प्रदेश गौरवशाली रहा है। यहाँ की धरती रामायण और महाभारत काल की कथाओं से परिपूर्ण है। जनश्रुति एवं ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर भगवान राम की माता, 'कौशिल्या' छत्तीसगढ़ की बेटी है। तब यह छत्तीसगढ़ का भू–भाग 'दक्षिण कोसल' कहलाता था। दक्षिण कोसल की बेटी कौशिल्या कहलायी। वर्तमान समय में भी छत्तीसगढ़ी लोक में बहुओं का नाम लेकर नहीं पुकारा जाता, बल्कि उनके जन्म स्थान से जोड़कर संबोधित किया जाता है।

छत्तीसगढ़ का लोकजीवन आज भी राम को भांजा मानकर अपने भांजों को राम के रूप में प्रणाम करता है। छत्तीसगढ़ के लोकजीवन में समाहित और यहां मनाये जाने वाले संपूर्ण तीज–त्यौहारों के अवसर पर गाये जाने वाले लोकगीतों में राम का प्रभाव रहता है। यही छत्तीसगढ़ के लोकजीवन की विशेषता है जो राममय है।

भगवान राम का जन्म चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को होने के कारण राम नवमी को पवित्र मानते हैं। छत्तीसगढ़ के लोकजीवन में इस तिथि को देव लग्न मानकर अधिकतर विवाह सम्पन्न किये जाते हैं। रामनवमी का त्यौहार छत्तीसगढ़ में धूमधाम से मनाया जाता है। छत्तीसगढ़ के गांवों में वर्षा नही होने तथा अकाल पड़ने की चिंता में समस्त ग्रामवासी भगवान राम के प्रति आस्था व्यक्त करने के लिये रामसत्ता या रामधुनी का आयोजन करते हैं।

छत्तीसगढ़ कृषि प्रधान राज्य है कृषि कार्यों में भी हमें राम की उपस्थिति दिखाई पड़ती है। खेतों से पककर फसल खलिहानों में आती है। तब मिंजाई के बाद अन्न को काठा (नापने का पैमाना) से नापा जाता है। किसान जब पहला काठा नापता है तो एक की संख्या के स्थान पर 'राम' बोलता है। यह लोक परम्परा लोक जीवन में राम की महिमा और उसकी उपस्थिति को बल देती है। इससे यह प्रतीत होता है कि छत्तीसगढ़ी लोकसंस्कृति, लोकपरम्परा, तीज–त्यौहार और यहाँ विभिन्न अवसरों पर गाये जाने वाले लोकगीतों में राम सर्वत्र समाये हुये है।

ग्रंथ सूची (Bibliography)

1. पटेल, डॉ. दीपशिखा, 2020, अंगराग का लोकतत्व, साहित्य संस्थान, गाजियाबाद,

201102

2. यदु, डॉ. हेमु, 2006, छत्तीसगढ़ का गौरवषाली इतिहास, बी.आर. पब्लिशिंग, दिल्ली

3. यादव, डॉ. पीसी लाल, 2020, छत्तीसगढ़ का लोकजीवन और राम कथा, गौरव

प्रकाशन रायपुर

संदर्भ ग्रंथ सूची

• शास्त्री प. चन्द्रशेखर, श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण, 1988, बालकाण्ड, 13 सर्ग, 26 श्लोक, सस्ती

साहित्य पुस्तक माला, बनारस

• यदु हेमू, छत्तीसगढ़ का गौरवशाली इतिहास, 2006 पृ. 19, प्रकाशक बी. आर पब्लिशिंग, दिल्ली

• प्रो. डॉ. भरत पटेल, खैरागढ़, जिला राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ (श्रुति परम्परा से प्राप्त)

• डॉ. पीसी लाल यादव, गंडई छत्तीसगढ़ (श्रुति परम्परा से प्राप्त)

• सुश्री अमृता बारले, भिलाई जिला दुर्ग, छत्तीसगढ़ (श्रुति परम्परा से प्राप्त)

• डॉ. पीसी लाल यादव, गंडई छत्तीसगढ़ (श्रुति परम्परा से प्राप्त)

• डॉ. जगदीश कुलदीप, चकरभाठा बिलासपुर, छत्तीसगढ़ (श्रुति परम्परा से प्राप्त)

• प्रो. डॉ. भरत पटेल, खैरागढ़, जिला राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ (श्रुति परम्परा से प्राप्त)

• प्रो. शरीफ मोहम्मद, बीजाडांडी, (श्रुति परम्परा से प्राप्त)

• स्व. पं. रामकृष्ण तिवारी, खैरागढ़, जिला राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ (श्रुति परम्परा से प्राप्त)

• प्रो. डॉ. भरत पटेल, खैरागढ़, जिला राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ (श्रुति परम्परा से प्राप्त)

•

• श्री बसंत यदु, खैरागढ़, जिला राजनांदगांव, छत्तीसगढ़ (श्रुति परम्परा से प्राप्त)